POLITICAL SCIENCE Dep.
BA-Part-I, Paper-II

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur, Samastipur

उग्रवादी क्रांतिकारी आंदोलन के अग्रदूत

बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिनचंद्र पाल आदि उग्रवादी क्रांतिकारी आंदोलन के समर्थक थे। इन तीनों को लाल-बाल-पाल के नाम से जाना जाता है। इनका मानना था कि कांग्रेस की नरमी एवं उदारनीति से स्वतंत्रता नहीं मिल सकती। सिर्फ प्रस्ताव पारित करने तथा अंग्रेजों की राजभक्ति करने एवं उनके सामने हाथ फैलाने से राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं होंगे, बल्कि इसके लिए लड़ना होगा।।

तिलक का कहना था कि "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर रहेंगे।" तिलक ने 1907 ई० में सूरत के अधिवेशन में कांग्रेस से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया। तिलक और उनके साथी इस अधिवेशन में उदारवादियों के प्रभाव से कांग्रेस ने जो प्रस्ताव पारित किया उससे सहमत नहीं थे। तिलक जब कांग्रेस से अलग होकर उग्रवादी आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे थे तब सरकार ने इस आपसी फूट का फायदा उठाकर आन्दोलन को कुचलने के लिए अनेक दमनकारी कानूनों का निर्माण किया। 1908 में तिलक को पुनः राजद्रोह के अपराध में बन्दी बना लिया गया और 6 साल

का कारावास देकर माण्डले जेल भेज दिया गया।

बाल गंगाधर तिलक ने 'सहमति आयु विधेयक' का इस आधार पर विरोध किया कि विदेशी सरकार को जनता पर सुधार लादने का कोई अधिकार नहीं। तिलक भारतीय संस्कृति को पाश्चात्य संस्कृति से श्रेष्ठ समझते थे। वे पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति की अन्धाधुन्ध नकल करने के पक्ष में नहीं थे।

बंगाल के विभाजन की उन्होंने बड़ी सख्त आलोचना की तथा 'स्वदेशी आन्दोलन' एवं विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार को ठीक बताया। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक राजनीति में यथार्थवादी थे। वे ब्रिटिश सरकार की सभी कूटनीतिक चालों को जानते थे। इसलिए वह राजनीति में आध्यात्मिक जैसी आदर्शवादी बातें नहीं करते थे।

बाल गंगाधर तिलक ने 'गीता रहस्य' तथा 'आर्कटिक होम इन द वेदाज' नामक पुस्तकें लिखीं। उन्होंने एक राष्ट्रीय लिपि की आवश्यकता पर भी जोर दिया। 1 अगस्त 1920 ई० को इस महान स्वतंत्रता सेनानी की मृत्यु हो गई। इनके बारे में महात्मा गाँधी ने भी कहा कि लोकमान्य तिलक नवीन भारत के निर्माता थे।

Dr. Archana Jha
Asst. Professor

Scanned with CamScanner